नागरिकशास्त्र शिक्षण में सहायक साधन

[AIDS IN TEACHING OF CIVICS]

"सहायक सामग्री अनुभव प्रदान करती है और शब्द एवं वस्तु में सम्बन्ध स्थापित करती है। यह विद्यार्थियों के समय में बचत करती है, सरल एवं विश्वसनीय सूचना प्रदान करती है, सौन्दर्यात्मक ज्ञान का विकास एवं अभिवृद्धि करती है, सुखद मनोरंजन प्रदान करती है, जटिल प्रदत्तों को सरलतम दृष्टिकोण प्रदान करती है, कल्पना को उत्तेजित करती है तथा छात्रों की निरीक्षण शक्ति का विकास करती है।"

—एम. पी. मफात्

("Material aids furnish experience, facilitate the association of object and word, save pupil's time, provide simple and authentic information, enrich and extend one's appreciation, furnish pleasant entertainment, provide a simplified view of complicated data, stimulate one's imagination and develop pupil's power of observation."

—M. P. Moffatt)

वर्तमान युग में शिक्षा सिर्फ सूचनायें प्रदान करने या ज्ञान की अभिवृद्धि करने का साधन नहीं है वरन् शिक्षा वह प्रक्रिया है जो बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है और विकास की इस प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि इसे विविध प्रकार से आकर्षित करने योग्य बनाया जाये जिससे छात्र इस प्रक्रिया में रुचि लें। शिक्षा की इस प्रक्रिया को आकर्षक, रोचक व लाभप्रद बनाने में सहायक सामग्री का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वास्तव में सहायक सामग्री वह साधन है जिसके द्वारा कठिन ज्ञान को सरल, स्पष्ट व रोचक ढंग से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। एक प्रसिद्ध चीनी कहावत है कि "एक बार देखना सौ बार बोलने से अच्छा होता है।" (One seeing is worth a hundred telling) डॉ. जे. जे. वेबर के एक अनुमान के अनुसार हम जो भी ज्ञान अर्जित करते हैं, उनमें 40% वह प्रत्यय होते हैं जिन्हें हमने दृश्य अनुभवों के द्वारा ग्रहण किया है, 25% वह अनुभव हैं जो हमारे श्रवण पर आधारित होते हैं, 17% वह हैं जो स्पर्श या भावनाओं पर आधारित हैं, 15% अन्य शारीरिक संवेदनाओं पर आधारित हैं व 3% स्वाद व सूँघने में। इस अनुमान के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हमारे कुल 65% अनुभव ऐसे हैं जो श्रव्य व दृश्य से सम्बन्ध रखते हैं अतः सीखने की प्रक्रिया को दृढ़ बनाने में श्रव्य सामग्री का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

Scanned with CamScanner

बाइनिंग और बाइनिंग ने श्रव्य-दृश्य सामग्री का अर्थ बताते हुए कहा है—

"सीखने का कोई भी तरीका जिसमें छात्र अपनी श्रव्य व दृश्य इन्द्रियों का प्रयोग करता है, उन्हें हम श्रव्य-दृश्य सामग्री कहते हैं।"

("Every type of device of teaching by which the pupil learns through the senses of vision and auditory is audio-visual aid."

– Binning and Binning)

वास्तव में शिक्षण में उपयुक्त होने वाली सहायक सामग्री अध्यापक के लिए छात्रों के ज्ञान को, तथ्यों को, क्षमताओं को हस्तान्तरित करने का एक सशक्त माध्यम है। विभिन्न शिक्षाविदों ने सहायक सामग्री के महत्त्व व आवश्यकताओं के बारे में निम्न विचार प्रस्तुत किये हैं—

श्रव्य-दृश्य सामग्री की आवश्यकता व महत्त्व (Need and Importance of Audio-Visual Aids) –

1. यह प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित होती हैं। अतः इनके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान स्थायी होता है।

2. यह सामग्री छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन की क्षमता को उत्पन्न करती है।

3. इनके प्रयोग द्वारा हम भूतकालीन वस्तुओं को वर्तमान में दर्शा सकते हैं, उदाहरणार्थ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का यदि हम इतिहास पढ़ायें तो विभिन्न रूपों को लेते हुए किस प्रकार वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज का रूप स्थापित हुआ, इसे हम दृश्य सामग्री द्वारा प्रस्तुत कर सकते हैं।

4. दूरस्थ वस्तुओं, व्यक्तियों आदि का ज्ञान भी हम इसके द्वारा सफलता से करा सकते हैं। जापान के आवास हम पढ़ाना चाहते हैं तो लकड़ी के छोटे-छोटे आवास मॉडल रूप में हम छात्रों को दिखा सकते हैं।

5. इसके प्रयोग द्वारा हम छात्रों को बाह्य वस्तुओं का ज्ञान कराते हैं जिससे वह कम मेहनत व कष्ट से अधिक से अधिक ज्ञान अर्जित कर लेते हैं।

6. बहुत कम प्रयास से छात्रों का ध्यान शिक्षण की ओर केन्द्रित किया जा सकता है।

7. सहायक सामग्री अध्यापक के लिए शिक्षण की एक पूरक रूप में होती है व यह कक्षा शिक्षण को विविधता प्रदान करती है।

8. श्रव्य-दृश्य सामग्री कक्षा के वातावरण में परिवर्तन लाकर वातावरण को सरस बनाती है।

9. यदि कोई सामग्री ऐसी है जिसका प्रयोग छात्र करते हैं तो यह छात्रों को वस्तुओं के उपयुक्त प्रयोग के अवसर प्रदान करती है और क्षण भर के लिये उन्हें यह आभास देती है कि यह उनकी अपनी वस्तु है, उदाहरणार्थ मतदान प्रक्रिया में हम छात्रों को बैलट

Scanned with CamScanner

पेपर बाँटकर मोहर लगाना सिखायें तो छात्रों को उससे पाठ के प्रति अपनत्व भाव लगने लगता है।

10. यदि हम वी. सी. आर. के द्वारा छात्रों को कोई चित्र दिखाते हैं जो विश्व के विभिन्न देशों से या अपने देश से सम्बन्ध रखता है तो हम छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव और देश-प्रेम की भावना को स्थापित कर सकते हैं।

11. मन्द गति से सीखने वाले छात्रों के लिए यह शिक्षण का बहुत ही प्रभावशाली तरीका है।

12. इसके द्वारा छात्रों में निरीक्षण व श्रवण शक्ति का विकास किया जा सकता है।

13. इसके प्रयोग के द्वारा व्यक्तिगत भिन्नता की संतुष्टि होती है।

14. यह अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप प्रदान करता है।

15. यह छात्रों की कल्पना शक्ति के विकास में सहायक है।

16. इसके प्रयोग द्वारा छात्रों की स्मरण शक्ति दृढ़ होती है।

विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा में प्रयोग होने वाले दृश्य-श्रव्य साधनों की आवश्यकता व महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है।

1. **क्रो एण्ड क्रो** के अनुसार—"श्रव्य-दृश्य उपकरण सीखने वालों को व्यक्तियों, घटनाओं, वस्तुओं और कारण तथा प्रभाव सम्बन्धों के नियोजित अनुभवों से लाभ उठाने का अवसर देते हैं।"

2. **बाइनिंग एण्ड बाइनिंग** के अनुसार—"श्रव्य-दृश्य सामग्री वे साधन हैं जो पाठ को रोचक बनाते हैं।"

3. **ई. बी. वेस्ले** के अनुसार—"दृश्य-श्रव्य साधन अनुभव प्रदान करते हैं। उनके प्रयोग से शब्दों व वस्तुओं का सम्बन्ध सरलतापूर्वक जुड़ जाता है, बालकों के समय की बचत होती है तथा उनकी सहायता से सरल तथा सही-सही बातों का पता चलता है। उनसे जहाँ बालकों का मनोरंजन होता है, वहीं से विभिन्न वस्तुओं की प्रशंसा करना भी सीख जाते हैं। वे जटिल बातों को सरल ढंग से पेश करते हैं। बालकों की कल्पना शक्ति को प्रेरित करते हैं और उनकी निरीक्षण शक्ति को विकसित करते हैं। सम्भव है, ऐसी सहायक सामग्री की व्यवस्था तो करनी पड़े, पर उनके लिए अनुवादक की कोई आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उनमें प्रकृति, रंग, स्थिति तथा गति सम्बन्धी सर्वत्र पाई जाने वाली भाषा प्रयुक्त होती है। इस प्रकार सीखने के लिए राजमार्ग का काम दे सकती है।"

4. **मेककल्सकी** के अनुसार—"उचित प्रकार से प्रयोग किये जाने वाली श्रव्य-दृश्य सामग्री अनेकों भ्रमों को उत्पन्न नहीं होने देती है।"

सहायक सामग्री का प्रयोग करते समय किन बातों को ध्यान में रखा जाये—

Scanned with CamScanner